बहुभाषी दैनिक समाचार पत्र

कानपुर से प्रकाशित

E-mail :- deekshalayapravah@gmail.com

दीक्षालय प्रवाह

वर्ष : 02 अंक : 83 कानपुर, 26 अगस्त, 2024 पेज-8 मूल्य : 3 रुपये

> पढ़ें पेज 3 पर

प्राकृतिक खेती में देशी गाय का अहम योगदान

(संवाददाता दीक्षालय प्रवाह)

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि देसी गौवंश युगो से भारतीय कृषक जीवन की शैली का हिस्सा रही हैं। गौवंश ने मानव को खेतों में हल चलाने, सड़कों पर भार ढोने, घर पर दूध और मूत्र, गोबर के साथ–साथ दैनिक जीवन में कई अन्य उपयोगी कार्यों में मदद की है। उन्होंने बताया कि देसी गाय को परिवार के एक अभिन्न सदस्य के रूप में माना जाता है। डॉ खान ने बताया कि गाय का दूध व्यवहारिक रूप से बूढ़े एवं बच्चे सभी के लिए आवश्यक एवं पचनीय है, इसका दूध एसिडिटी को कम करता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और दिमाग को तेज करता है। उन्होंने बताया कि गौवंश का गोबर मिट्टी की उर्वरता और फसल उत्पादकता बढ़ाने में सहायक है। गाय के गोबर की खाद एक प्राकृतिक खाद है और गाय के गोबर से कई अन्य जैविक खाद बनाई जा सकती है। गाय आधारित प्राकृतिक जैविक खेती से मिट्टी की उत्पादकता में कई गुना वृद्धि हुई है। अब किसानों के लिए रसायनों और खतरनाक जहरीले पदार्थों से भूमि को दूषित किए बिना विविध फसलें लेना संभव है।

प्राकृतिक खेती में देशी गाय का अहम योगदान : डॉ खलील

दैनिक कानपुर उजाला

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील ख़ान ने बताया कि देसी गौवंश युगो से भारतीय कृषक जीवन की शैली का हिस्सा रही हैं द्य गौवंश ने मानव को खेतों में हल चलाने, सड़कों पर भार ढोने, घर पर दूध और मूत्र, गोबर के साथ-साथ दैनिक जीवन में कई अन्य उपयोगी कार्यों में मदद की है। उन्होंने बताया कि देसी गाय को परिवार के एक अभिन्न सदस्य के रूप में माना जाता है। डॉ ख़ान ने बताया कि गाय का दूध व्यवहारिक रूप से बूढ़े एवं बच्चे सभी के लिए आवश्यक एवं पचनीय है, इसका दूध एसिडिटी को कम करता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और दिमाग को तेज करता है।

उन्होंने बताया कि गौवंश का गोबर मिट्टी की उर्वरता और फसल उत्पादकता बढ़ाने में सहायक है द्य गाय के गोबर की खाद एक प्राकृतिक खाद है और गाय के गोबर से कई अन्य जैविक खाद बनाई जा सकती है। गाय आधारित प्राकृतिक जैविक खेती से मिट्टी की उत्पादकता में कई गुना वृद्धि हुई है । अब किसानों के लिए रसायनों और खतरनाक जहरीले पदार्थों से भूमि को दूषित किए बिना विविध फसलें लेना संभव है।

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
यूपी मैसेंजर
जनता की आवाज
अंक :205 लखनऊ से प्रकाशित लखनऊ , सोमवार 26 अगस्त 2024 पृष्ठ : 08

में महिला सुरक्षा, कोलकाता की घटना से पूरा देश आक्रोशित
नरगिस फाखरी ने ऑफ शोल

प्राकृतिक खेती में देशी गाय का अहम योगदान- डॉ खलील खान

यूपी मैसेंजर संवादाता

कानपुर ,सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि देसी गौवंश युगो से भारतीय कृषक जीवन की शैली का हिस्सा रही हैं गौवंश ने मानव को खेतों में हल चलाने, सड़कों पर भार ढोने, घर पर दूध और मूत्र, गोबर के साथ-साथ दैनिक जीवन में कई अन्य उपयोगी कार्यों में मदद की है।उन्होंने बताया कि देसी गाय को परिवार के एक अभिन्न सदस्य के रूप में माना जाता है।डॉ खान ने बताया कि गाय का दूध व्यवहारिक रूप से बूढ़े एवं बच्चे सभी के लिए आवश्यक एवं पचनीय है, इसका दूध एसिडिटी को कम करता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और दिमाग को तेज करता है। उन्होंने बताया कि गौवंश का गोबर मिट्टी की उर्वरता और फसल उत्पादकता बढ़ाने में सहायक है गाय के गोबर की खाद एक प्राकृतिक खाद है और गाय के गोबर से कई अन्य जैविक खाद बनाई जा सकती है गाय आधारित प्राकृतिक जैविक खेती से मिट्टी की उत्पादकता में कई गुना वृद्धि हुई है अब किसानों के लिए रसायनों और खतरनाक जहरीले पदार्थों से भूमि को दूषित किए बिना विविध फसलें लेना संभव है

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 16 अंक : 57 कानपुर, सोमवार 26 अगस्त 2024 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

प्राकृतिक खेती में देशी गाय का अहम योगदान : डॉ खलील ख़ान

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील ख़ान ने बताया कि देसी गौवंश युगो

से भारतीय कृषक जीवन की शैली का हिस्सा रही हैं द्य गौवंश ने मानव को खेतों में हल चलाने, सड़कों पर भार ढोने, घर पर दूध और मूत्र, गोबर के साथ-साथ दैनिक जीवन में कई अन्य उपयोगी कार्यों में मदद की है। उन्होंने बताया कि देसी गाय को परिवार के एक अभिन्न सदस्य के रूप में माना जाता है। डॉ ख़ान ने बताया कि गाय का दूध व्यवहारिक रूप से बूढ़े एवं बच्चे सभी के लिए आवश्यक एवं पचनीय है, इसका दूध एसिडिटी को कम करता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और दिमाग को तेज करता है। उन्होंने बताया कि गौवंश का गोबर मिट्टी की उर्वरता और फसल उत्पादकता बढ़ाने में सहायक है द्य गाय के गोबर की खाद एक प्राकृतिक खाद है और गाय के गोबर से कई अन्य जैविक खाद बनाई जा सकती है द्य गाय आधारित प्राकृतिक जैविक खेती से मिट्टी की उत्पादकता में कई गुना वृद्धि हुई है द्य अब किसानों के लिए रसायनों और खतरनाक जहरीले पदार्थों से भूमि को दूषित किए बिना विविध फसलें लेना संभव है ।

प्राकृतिक खेती में देशी गाय का अहम योगदान

कानपुर, 25 अगस्त। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील ख़ान ने बताया कि देसी गौवंश युगो से भारतीय कृषक जीवन की शैली का हिस्सा रही हैं। गौवंश ने मानव को खेतों में हल चलाने, सड़कों पर भार ढोने, घर पर दूध और मूत्र, गोबर के साथ-साथ दैनिक जीवन में कई अन्य उपयोगी कार्यों में मदद की है। उन्होंने बताया कि देसी गाय को परिवार के एक अभिन्न सदस्य के रूप में माना जाता है। डॉ ख़ान ने बताया कि गाय का दूध व्यवहारिक रूप से बूढ़े एवं बज्जे सभी के लिए आवश्यक एवं पचनीय है, इसका दूध एसिडिटी को कम करता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और दिमाग को तेज करता है। उन्होंने बताया कि गौवंश का गोबर मिट्टी की उर्वरता और फसल उत्पादकता बढ़ाने में सहायक है। गाय के गोबर की खाद एक प्राकृतिक खाद है और गाय के गोबर से कई अन्य जैविक खाद बनाई जा सकती है। गाय आधारित प्राकृतिक जैविक खेती से मिट्टी की उत्पादकता में कई गुना वृद्धि हुई है। अब किसानों के लिए रसायनों और खतरनाक जहरीले पदार्थों से भूमि को दूषित किए बिना विविध फसलें लेना संभव है।

अंक-174 कानपुर, सोमवार 26 अगस्त 2024 पृष्ठ-8

दैनिक
आज का कानपुर

कानपुर से प्रकाशित लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, महोबा, बांदा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर देहात, सुल्तानपुर, अमेठी, बहराइच में प्रसारित

प्राकृतिक खेती में देशी गाय का अहम योगदान-डॉ खलील ख़ान

आज का कानपुर

कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील ख़ान ने बताया कि देशी गौवंश युगो से भारतीय कृषक जीवन की शैली का हिस्सा रही हैं गौवंश ने मानव को खेतों में हल चलाने, सड़कों पर भार ढोने, घर पर दूध और मूत्र, गोबर के साथ-साथ दैनिक जीवन में कई अन्य उपयोगी कार्यों में मदद की है उन्होंने बताया कि देसी गाय को परिवार के एक अभिन्न सदस्य के रूप में माना जाता है डॉ ख़ान ने बताया कि गाय का दूध व्यवहारिक रूप से बूढ़े एवं बच्चे सभी के लिए आवश्यक एवं पचनीय है, इसका दूध एसिडिटी को कम करता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और दिमाग को तेज करता है उन्होंने बताया कि गौवंश का गोबर मिट्टी की उर्वरता और फसल उत्पादकता बढ़ाने में सहायक है गाय के गोबर की खाद एक प्राकृतिक खाद है और गाय के गोबर से कई अन्य जैविक खाद बनाई जा सकती है गाय आधारित प्राकृतिक जैविक खेती से मिट्टी की उत्पादकता में कई गुना वृद्धि हुई है अब किसानों के लिए रसायनों और खतरनाक जहरीले पदार्थों से भूमि को दूषित किए बिना विविध फसलें लेना संभव है।

राष्ट्रीय
सहारा
कानपुर • सोमवार • 26 अगस्त • 2024

प्राकृतिक खेती में देशी गाय का अहम योगदान

[...]शाला में छात्रों को जानकारी देते प्रोफेसर।

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) के कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि देशी गोवंश युगों से भारतीय कृषक जीवन की शैली का हिस्सा रही हैं। इस गोवंश ने मानव को हमेशा खेतों में हल चलाने, सड़कों पर भार ढोने, घर पर दूध और मूत्र, गोबर के साथ-साथ दैनिक जीवन में कई अन्य उपयोगी कार्यों में

[...] की है। उन्होंने बताया कि देशी गाय को परिवार के एक अभिन्न सदस्य के रूप में माना [...] है। देशी गाय का दूध व्यवहारिक रूप से बूढ़े एवं बच्चे सभी के लिए आवश्यक एवं [...]ीय है। इसका दूध एसिडिटी को कम करता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और [...]ग को तेज करता है। उन्होंने बताया कि गोवंश का गोबर मिट्टी की उर्वरता और फसल [...]दकता बढ़ाने में सहायक है। इस गाय के गोबर की खाद एक प्राकृतिक खाद है और [...] के गोबर से कई अन्य जैविक खाद बनाई जा सकती है। इस गाय आधारित प्राकृतिक [...]क खेती से मिट्टी की उत्पादकता में कई गुना वृद्धि हुई है। अब किसानों के लिए रसायनों [...] खतरनाक जहरीले पदार्थों से भूमि को दूषित किए बिना विविध फसलें लेना संभव है।

rni no uphin47232

उपदेश टाइम्स

कानपुर से प्रकाशित एवं कानपुर, उन्नाव, लखनऊ, गोण्डा, जौनपुर, फिरोजाबाद, जालौन उरई, कन्नौज, फर्रुखाबाद, एटा मे प्रसारित

मूल्य रू0 2.00 कानपुर,सोमवार 26 अगस्त,2024 (Email: updeshti

प्राकृतिक खेती में देशी गाय का अहम योगदान : डॉ खलील खान

कानपुर नगर उपदेश टाइम्स चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया कि देशी गौवंश युगो से भारतीय कृषक जीवन की शैली का हिस्सा रही हैं गौवंश ने मानव को खेतों में हल चलाने, सड़कों पर भार ढोने, घर पर दूध और मूत्र, गोबर के साथ-साथ दैनिक जीवन में कई अन्य उपयोगी कार्यों में मदद की है उन्होंने बताया कि देसी गाय को परि-वार के एक अभिन्न सदस्य के रूप में माना जाता है डॉ खान ने बताया कि गाय का दूध व्यवहारिक रूप से बूढ़े एवं बच्चे सभी के लिए आवश्यक व शीघ्र पचने वाला है, इसका दूध एसिडिटी को कम करता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और दिमाग को तेज करता है उन्होंने बताया कि गौवंश का गोबर मिट्टी की उर्वरता और फसल उत्पादकता बढ़ाने में सहायक है गाय के गोबर की खाद एक प्राकृतिक खाद है और गाय के गोबर से कई अन्य जैविक खाद बनाई जा सकती है गाय आधारित प्राकृतिक जैविक खेती से मिट्टी की उत्पादकता में कई गुना वृद्धि हुई है अब किसानों के लिए रसायनों और खतरनाक जहरीले पदार्थों से भूमि को दूषित किए बिना विविध फसलें लेना संभव है।

हिंदी दैनिक

रहस्य संदेश

-238 सोमवार, 26 अगस्त 2024 लखनऊ व एटा से प्रकाशित R.N.I. No.: UPHIN/2007/20715 पृष्ठ- 4

प्राकृतिक खेती में देशी गाय का अहम योगदान– डॉ खलील

रहस्य संदेश ब्यूरो

कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील ख़ान ने बताया कि देसी गौवंश युगो से भारतीय कृषक जीवन की शैली का हिस्सा रही हैं। गौवंश ने मानव को खेतों में हल चलाने, सड़कों पर भार ढोने, घर पर दूध और मूत्र, गोबर के साथ-साथ दैनिक जीवन में कई अन्य उपयोगी कार्यों में मदद की है। उन्होंने बताया कि देसी गाय को परिवार के एक अभिन्न सदस्य के रूप में माना जाता है। डॉ ख़ान ने बताया कि गाय का दूध व्यवहारिक

रूप से बूढ़े एवं बच्चे सभी के लिए आवश्यक एवं पचनीय है, इसका दूध एसिडिटी को कम करता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और दिमाग को तेज करता है। उन्होंने बताया कि गौवंश का गोबर मिट्टी की उर्वरता और फसल उत्पादकता बढ़ाने में सहायक है। गाय के गोबर की खाद एक प्राकृतिक खाद है और गाय के गोबर से कई अन्य जैविक खाद बनाई जा सकती है। गाय आधारित प्राकृतिक जैविक खेती से मिट्टी की उत्पादकता में कई गुना वृद्धि हुई है । अब किसानों के लिए रसायनों और खतरनाक जहरीले पदार्थों से भूमि को दूषित किए बिना विविध फसलें लेना संभव है।

प्राकृतिक खेती में देशी गाय का अहम योगदान- डॉ खलील खान

दि ग्राम टुडे , कानपुर । (संजय मौर्य)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनंद कुमार सिंह के निर्देश के क्रम में कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक

डॉ खलील खान ने बताया कि देसी गौवंश युगो से भारतीय कृषक जीवन की शैली का हिस्सा रही हैं ' गौवंश ने मानव को खेतों में हल चलाने, सड़कों पर भार ढोने, घर पर दूध और मूत्र, गोबर के साथ-साथ दैनिक जीवन में कई अन्य उपयोगी कार्यों में मदद की है। उन्होंने बताया कि देसी गाय को परिवार के एक अभिन्न सदस्य के रूप में माना जाता है। डॉ खान ने बताया कि गाय का दूध व्यवहारिक रूप से बूढ़े एवं बच्चे सभी के लिए आवश्यक एवं पचनीय है, इसका दूध एसिडिटी को कम करता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है और दिमाग को तेज करता है। उन्होंने बताया कि गौवंश का गोबर मिट्टी की उर्वरता और फसल उत्पादकता बढ़ाने में सहायक है ' गाय के गोबर की खाद एक प्राकृतिक खाद है और गाय के गोबर से कई अन्य जैविक खाद बनाई जा सकती है ' गाय आधारित प्राकृतिक जैविक खेती से मिट्टी की उत्पादकता में कई गुना वृद्धि हुई है ' अब किसानों के लिए रसायनों और खतरनाक जहरीले पदार्थों से भूमि को दूषित किए बिना विविध फसलें लेना संभव है '